MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता ™

July To Sept. 2022
Issue 43, Vol-08

Date of Publication
01 Sept. 2022

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

**विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले**

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

27) लोकगीत का महत्व एवं आवश्यकता (वर्तमान परिप्रेक्ष्य में)
डॉ. विजयलक्ष्मी शास्त्री & मनोरमा पाण्डेय, सरगुजा (छ०ग०) ||104

28) भारत एवं वैश्विक स्तर पर लैंगिक समानता के लिए एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ...
Dr. Seema Kumari, Dumka ||108

29) वर्तमान समय में पर्यावरण शिक्षा की प्रासंगिकता
प्रो०डॉ० रेणु सिंह, मधुबनी ||111

30) गिरिधर कविराय के नीति—काव्य का वैशिष्ट्य
डॉ. सतीश कुमार सिंह, दरभंगा ||115

31) अंक बटोरने की अंधी दौड़ में पिछड़ती शिक्षा की गुणवत्ता
ध्रुव सिंह तोमर, जिला—मैंनपुरी (उत्तर—प्रदेश) ||119

32) उत्तराखण्ड की गाथाएं : संगीत के साथ आस्था और पूजा का सामंजस्य
डॉ. पंकज उप्रेती, जिला चम्पावत ||121

33) आज भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता
डॉ. विनोद कुमारी, मेरठ ||125

34) समग्र स्वास्थ्य संरक्षण में आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति की दार्शनिक आधारशिला—...
डॉ.कृष्णा झरे & जोगीराज यादव ||130

35) भीलवाड़ा जिले के मंदिरों का ऐतिहासिक अध्ययन : जहाजपुर तहसील के विशेष ...
सुरेश कुमार मीणा, उदयपुर (राजस्थान) ||135

36) तुलसी की भक्ति भावना
डॉ. इन्दु कुमारी, मधेपुरा ||141

37) आधुनिक हिन्दी—गीत काव्य का स्वरूप
डॉ० कैलाश नाथ मिश्र, दरभंगा, बिहार ||144

38) उत्तराखण्ड में प्राकृतिक आपदायें एवं उनका मानवीय प्रबन्धकीय उपाय
डॉ० सूरत सिंह बलूड़ी, देहरादून ||147

39) तुलसी के गीतिकाव्यों का साहित्यिक एवं सांगीतिक विवेचन तथा जनमानस पर ...
दीपिका शुक्ला, दिल्ली ||153

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

27

लोकगीत का महत्व एवं आवश्यकता
(वर्तमान परिप्रेक्ष्य में)

डॉ. विजयलक्ष्मी शास्त्री
सहा. प्राध्यापक हिन्दी,
राजीव गांधी शास०स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अम्बिकापुर, सरगुजा (छ०ग०)

मनोरमा पाण्डेय
एम.फिल (हिन्दी),
राजीव गांधी शास० स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अम्बिकापुर, सरगुजा (छ०ग०)

****

शोध सारांश

सृष्टि के आदिकाल से ही लोकगीतों का प्रचलन रहा है। जीवन के प्रत्येक क्षण, जिनमें मानवीय भावनाओं के साथ–साथ हर्ष–विलास, रीति–रिवाज, परम्पराएँ आदि समाहित हो, लोकगीतों के अन्तर्गत आती है। गीत–संगीत का मानव जीवन में विशेष महत्व रहा है; क्योंकि मनोरंजन के साथ–साथ लोकगीत मानव के लिए जीविकोपार्जन का एक प्रमुख साधन भी रहा है। कहना उचित होगा कि लोकगीत की प्राचीनता उतनी ही मानी जा सकती है, जितनी आदिमानव की। लोकगीत हमारे जीवन का महासागर है जिसे हम जितना भी सुनें, उसकी गहराइयों में डुबते चले जाते है। समाज में लोकगीत का विशेष महत्व है, किन्तु वर्तमान मे लोकगीतों की आवश्यकता– एक मुख्य बिन्दु बनी हुई है। आज के समय में लोकगीतों का स्थान विभिन्न फिल्मी गीत–संगीत, डी.जे. आदि ने ले लिया है, जो इन गीतों की विलुप्तता को दर्शाता है, किन्तु स्त्रियों ने अपने कंठो में इन गीतों को संजोए रखा है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लोकगीतों के महत्व के साथ–साथ इसकी आवश्यकता को भी बनाये रखना अति आवश्यक है जिससे आने वाली पीढ़ियो को भी ज्ञात हो कि यह हमारी संस्कृति की ही अमूल्य धरोहर है। इस सन्दर्भ में **महात्मा गांधी** जी ने कहा था कि– ''वही काव्य और वही समाज चिरजीवी रहेगा, जिसे लोग सुगमता से पा सकेंगे और आसानी से पचा सकेंगे। अतः यदि साहित्य को समूह के साथ विकसित होना है, तो उसे लोक समाज एंव लोकसाहित्य से जुड़ना होगा। वस्तुतः साहित्य लोकगीतों से ही अनुप्राणित होकर सहज होता है और रस का सृजन करता है, क्योंकि लोकगीत अकश्त्रिम एवं पूर्ण होते g**[1]

मूल शब्द– लोकगीत, रीति–रिवाज, परम्पराएँ, जीविकोपार्जन, विलुप्तता, संस्कृति, लोकसाहित्य।

भूमिका– लोकगीत समाज में घनिष्ठ संबंध रखता है और मानव एक सामाजिक प्राणी होने के नाते इन लोकगीतों को अपने कंठों मे सजाकर रखता है। लोकगीत विश्व में व्याप्त होती है। इन लोकगीतों में समाज एवं संस्कृति संरक्षित होती है। लोकगीत लोकजीवन के विभिन्न रूपों को आच्छादित करती है। मानव जीवन के सुख–दुख रहन–सहन, धार्मिक विश्वास, रीति–रिवाज, व्रत–पूजा पाठ आदि सभी लोकगीतों में समाहित है। लोकगीत मौखिक परम्परा है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कार को संग्रहित करती है।

लोकगीत के विषय में बात करें तो हम देखते है कि मानव द्वारा गेय पद में लोकभाषा में गाये जाने वाले गीत लोकगीत कहलाते है। इन्हें स्त्री और पुरुष दोनो मिलकर गाते हैं किन्तु अधिकतर इन गीतों को स्त्रियों द्वारा गाया जाता है। लोकगीत के रचयिता प्रायः अपने सुरीले कण्ठों से गाकर जनमानस तक फैलाया होगा।

डॉ. कुंज बिहारी दास के अनुसार– ''लोकगीत उन लोगो के जीवन की अनायास प्रवाहात्मक अभिव्यक्ति है, जो सुसंस्कृत तथा सुसभ्य, प्रभावों से बाहर रहकर कम या अधिक रूप में आदिम अवस्था मे निवास करते है।''[2]

डॉ. श्यामाचरण दुबे के अनुसार– 'वेद और स्मृति भारतीय संस्कृति के जिन पक्षों के संबंध में मौन

लोकगीत अंशतः उनके संबंध में कुछ कह सकते है।''[3]

रामनरेश त्रिपाठी जी लोकगीत के संबंध मे कहते है कि– ''लोकगीतों में छन्द नहीं केवल लय है।''[4]

फोक सांग्स ऑफ मैकल हिल्स की भूमिका में विद्वान लेखक **डॉ. बैरियर एलविन** ने लिखा है कि लोकगीतों को लिपि श्रृंखला में बांधने पर उनका विकास नष्ट हो जाता है। अतः लोक साहित्य के प्रेमी उनका संग्रह कर बड़ा उपकार करते है।''[5] किसी भी समाज की संस्कृति को जानने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम लोकगीत होता है। लोकगीत जीवन में युग–युगान्तर से चली आ रही परंपरा है। लोकगीत का लोकजीवन में विशेष महत्व है। लोकगीत एक मौखिक अभिव्यक्ति है, जिसे सुनकर हृदय प्रफुल्लित हो उठती है। मानव अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं को लोकगीत के माध्यम से व्यक्त करता है।

डॉ. श्याम परमार ने लोकगीतों के स्वरूप और उनके विकास पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि– ''लोकगीतों का अस्तितव समय के आधारतल पर टिका रहता है। अपने जन्म के अनन्तर ये गीत कुछ समय तक मधूर कंठो मे विराजमान रहते हैं। फिर इनके रूप में कुछ परिवर्तन भी आरंभ हो जाता है। पुराने गीत का तिरोभाव, नये गीत के जन्म की भूमिका है। प्राचीनता के ध्वंस में नवीनता का उन्मेष कर लोकगीतों की परम्परा सतत प्रवाहमयी रहती है।''[6]

इस प्रकार लोकगीत का स्वरूप अनंत काल तक चली आ रही मौखिक परम्परा है। ये परम्पराएँ समाज मे निरंतर चलती रहेंगी। लोकगीत का लोकसमाज में विशेष महत्व है। लोक मानव लोकगीतो के माध्यम से ही अपनी भावनाओं, विचारों, अभिव्यक्ति को स्वतंत्र एवं स्वच्छन्द रूप मे समाज के समक्ष लाता है। अतः लोकगीत जीवन के उस वृक्ष के समान है जिसकी जड़े अत्यधिक मजबूत होती है। आधुनिकता के साथ–साथ लोकगीतों के स्वरूप में भी कमियाँ आने लगी है किन्तु कुछ लोक कलाकारों तथा स्त्रियों ने विभिन्न संस्कार, अवसरों में लोकगीतों को गाकर इसकी अस्मिता को बनाये रखा है।

लोकगीत का महत्व एवं आवश्यकता– लोकगीत का जनजीवन मे विशेष महत्व होता है। लोकगीतों की एक खूबी यह भी है कि इन लोकगीतों की शैली सरल, सहज एवं बोली में मिठास होती है जिसे सुनकर हमारे हृदय में आनंद की प्राप्ति होती है। लोकगीत की सबसे बड़ी विशेषता यह भी है कि इनके गीत समाज के शिक्षित हो या अशिक्षित सभी के मन मे स्पन्दन एवं कम्पन तक लाने की क्षमता रखती है। इन गीतों मे समाज के जनजातियों के विश्वास, रहन–सहन, रीति–रिवाज को प्रभावित करती है। साहित्य के प्रति मानव के मन में वर्षो से ही जिज्ञासा रही है। यह जिज्ञासा लोकगीत का रूप धारण कर लेती है। **हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने लोकगीत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि, ''लोकगीतों का संसार सत्य का संसार है। लोकगायक के अंतर्भावों का वास्तविक चित्रण वहाँ रहता है। जटिलता दुरूहतः और गोपनीयता, उक्तियों का सौन्दर्य वहाँ लक्षित होता है। लोकगीत की उस विशाल और व्यापक सौन्दर्य राशि के समक्ष संसार की सम्पूर्ण कृत्रिमता तुच्छ है। इसी प्रकार साहित्य में लोकगीत का सर्वोपरि स्थान रहा है। लोकगीत अपने आप में पूर्ण रूप धारण कर लिया है यह तो समाज के दिखावे से कहीं दूर है।''[7]

मैनें लोकगीतों के महत्व को मुख्यतः तीन वर्गो मे रखा है –

(I) सामाजिक जीवन मे लोकगीतों का महत्व– सामाजिक प्राणी होने के नाते मानव समाज के विभिन्न रीति–रिवाजों, नियमों और संस्कारो से बंधा रहता है। जन्म, विवाह तथा मृत्यु तक के समस्त गीतों मे मानव ने अपनी सामाजिकता का निर्वाह किया है और लोकमानस में अपनी वाणी को जन–जन तक पहुँचाया है। समाज संस्कृति का ही पोषक है; संस्कृति के द्वारा ही मानव समाज के बनाये नियमों, रीति–रिवाज, रहन–सहन आदि को अपनाता है। मानव जीवन संस्कारो से घिरा रहता है जहाँ पुत्र–पुत्री के जन्म पर सोहर गीत गाये जाते है वही बेटी के विदाई होने पर माता–पिता के अश्रु थमने का नाम नही लेते –

''कच्ची ईट बाबूल देहरी न

धरियों बिटिया न दैयो विदेश।''[८]

कहने का तात्पर्य यह है कि कच्ची ईटो से मकान न बनवाना और बिटिया को दूर देश नही भेजना।

(II) धार्मिक जीवन में लोकगीतों का महत्व— धर्म का लोकजीवन में विशेष महत्व है। सामाजिक जीवन का निर्वाह करने के साथ—साथ मानव ने धार्मिक जीवन को भी अपनाया। लोकगीतों में धर्म का विशेष महत्व है। धर्म के आधार पर कहीं व्रत, पूजा—पाठ, अनुष्ठान किया जाता है तो कहीं देवी गीतों तथा राम भक्ति एवं तो कही कृष्ण राधा प्रेम भक्ति की छवि देखने को मिलती है —

''आए गए कृष्ण मुरारी, गैले—गैले राधा प्यारी;
और बीच गोपी नार, मथुरा की कुंज गली में।''[९]

धर्म के प्रति मानव जीवन मे विशेष विश्वास और आस्था होती है। इन आस्थाओं और विश्वासों को वे सदैव सुरक्षित रखने का प्रयास करते है। धर्म एक ऐसी अलौकिक शक्ति है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपने कल्याण हेतु प्रयोग करता है। **टायलर** ने इस संबंध में कहा हैं कि— ''धर्म अलौकिक शक्तियों पर विश्वास है।''[१०]

(III) धार्मिक जीवन में लोकगीतों का महत्व — लोकगीतों का पारिवारिक जीवन में विशेष महत्व है। परिवार मे जन्म एवं विवाह संबंधी नातेदार परस्पर एक दूसरे के सहयोगी होते है। जन्म के समय जहाँ परिवार मिलकर नये जीवन के आगमन पर सोहर गीत गाते है वहीं दूसरी ओर विवाह संबंधी लोकगीतों को गाकर सामाजिकता का निर्वाह करते है। इस सन्दर्भ में **डॉ. राजेश श्रीवास्तव 'शम्बर' जी** ने कहा है कि— ''पारिवारिक जीवन की मर्यादाओं का जितना ध्यान लोकगीतों मे रखा गया है उतना साहित्य के अन्य संदर्भो में नहीं है।''[११] परिवार मे विवाह का विशेष महत्व है, परिवार के सभी सदस्य एक साथ मिलकर विवाह कार्या में मग्न हो जाते है। गांव की बेटी सभी की बेटी होती है और विवाह में सभी आर्थिक एवं शारीरिक रूप से जितनी इच्छा हो वे अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करते है। बेटी की विदाई पर परिवार के सभी सदस्य रोते है—

''चढ़त बेरा धरम के उतरल बेरा लगिन के
धरम धरम जस ले ले, फेर धरम नही मिले
आज बेटी भये हवे बिरान, अपन दाई के राम दुलारिन
छिन भर कोरा में ले ले, हाय दाई कोरा दुलभ होई जाई
अपन दाऊ के राम दुलारिन, छिन भर कोरा में ले ले
आज बेटी भये हवे बिरान, छिन भर कोरा में ले ले।''[१२]

विवाह के उपरान्त जब विदाई का समय आता है तब माता पिता का ह्दय अत्यधिक व्यथित हो जता है। इस छत्तीसगढ़ी लोक गीत में कहा जा रहा हैं कि धर्म का समय चढ़ गया, लगन का बेला उतर रहा है, आज बेटी पराई हो गई, अपनी माँ की प्यारी बेटी। बेटी माँ से कहती है कि माँ मुझे थोड़ी देर के लिये ही अपनी गोद मे ले लो। पिता से कहती है कि पल भर के लिये मुझे गोद में ले लो। अब यह गोद दुलर्भ हो जायेगी क्योंकि आज बेटी विरानी हो जाएगी।

अत: लोकगीतों का महत्व उन लोगो के लिये अधिक हैं, जिन्होंने आज भी इसको एक सूत्र में बांधकर रखा है, वरना वर्तमान जगत में तो आधुनिकता के साथ—साथ फिल्मी गीत—संगीत, डी.जे. की चकाचौंध के कारण लोकगीतों की झलक भी दिखाई नहीं देती किन्तु इन गीतों का समाज में जो महत्व है। उसे नकारा नही जा सकता।

लोकगीत की आवश्यकता (वर्तमान परिप्रेक्ष्य में)— लोकगीतों का उद्‌भव और विकास मानव के आदिकाल से ही हो चुकी थी। लोकगीतों में आदिम संस्कशति की झलक दिखायी देती है। लोकगीत प्रारम्भ में मानव के जीवोकोपार्जन हेतु अति आवश्यक थे, कुछ गाकर, श्रोतागण का मनोरंजन कर लोकमानव अपना गुजारा कर लेते थे, किन्तु वर्तमान सन्दर्भ में लोकगीतों की कमियां समाज में देखने को मिल रही है। मैनें भी कई ग्रामीण लोगों को लोकगीत गाने के लिए प्रेरित किया किन्तु उन्होंने संकोच वश गीतों को गाने से मनाही कर दिया लेकिन एक बुजुर्ग स्त्री ने कुछ गुनगुनाकर यह दर्शाया कि आज भी लोकगीत बुजुर्गो मे जीवित है। अब आवश्यकता इस बात की हैं कि युवा पीढ़ी तक इस गीत को युग—युगान्तर पीढ़ी दर पीढ़ी कैसे जीवित रखा जाए? क्योंकि वर्तमान में

गीतों की जगह फिल्मी गीतो, डी.जे., आधुनिक लोल गीतों ने ले लिया है। प्रत्येक युवा भी इन को अपना मनोरंजन का साधन मानते है।

वर्तमान सन्दर्भ मे लोकगीतों की अस्मिता को ये रखना अति आवश्यक है ताकि आने वाली इस लोकगीत के महत्ता को समझे और इसे आगे यें।

अत: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लोकगीत का महत्व आवश्यकता मानव जीवन के लिए अति आवश्यक **डॉ. शान्ति जैन** ने इस सन्दर्भ मे ठीक ही कहा कि– 'शिशु के प्रथम क्रन्दन से लेकर जीवन की तिम कड़ी तक के भावचित्र इनमे है। भाई से मिलने व्याकुल बहन की व्यथा–कथा, स्त्रियों का भूषण–प्रेम, सास ननंद और सौत के अत्याचारों से ड़ित स्त्री की मनोव्यथा, कृषक परिवार की विपन्नता, की शौर्यगाथा तथा मिलन–विरह के रंगारंग भाव गीतों में मिलते है। दूसरे शब्दो में, इन लोकगीतों जीवन का शाश्वत सत्य झलकता है।'[१३]

न्दर्भ –

(१) जैन, डॉ. शान्ति, लोकगीतों के सन्दर्भ र आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक वाराणसी, थम संस्करण १९६४, पृष्ठ–६

(२) शास्त्री, डॉ. तेज नारायण लाल, मैथिली कगीतों का अध्ययन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, थम संस्करण १९६२, पृष्ठ–११

(३) जैन, कांति कुमार, छत्तीसगढ़ी बोली याकरण और कोश, राधाकृष्ण प्रकाशन, अन्सारी रोड़, रियागंज, दिल्ली १९६९ पृष्ठ–१५६

(४) डॉ. सत्येन्द्र, लोकसाहित्य विज्ञान, शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी आगरा, द्वितीय संशोधित संस्करण १९७१, पृष्ठ–२१३

(५) पीयूस, जगदीश प्रसाद, लोकसाहित्य के आयाम, लोकसाहित्य संस्थान ए.१२५ मेहदौरी, इलाहाबाद, प्रथमावृति जनवरी १९७८, पृष्ठ–५८

(६) गावीत, डॉ. जयश्री, लोकसाहित्य विविध आयाम एवं नयी दृष्टि, विद्या प्रकाशन सी–४४९ गुजैनी कानपुर–२२, संस्करण प्रथम २००७, पृष्ठ–१३५

(७) गावीत, डॉ. जयश्री, लोकसाहित्य विविध आयाम एवं नयी दृष्टि, विद्या प्रकाशन सी–४४९ गुजैनी कानपुर–२२, संस्करण प्रथम २००७, पृष्ठ–१३५

(८) शम्बर, डॉ. राजेश श्रीवास्तव, लोकसाहित्य, कैलाश पुस्तक संदन भोपाल, पृष्ठ–१७

(९) शर्मा, मीनाक्षी, लोकगीतों मे कृष्ण काव्य का स्वरूप, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण १९८९, पृष्ठ–७६

(१०) श्रीवास्तव, डॉ. ए.पी. जनजातीय समाज का समाजशास्त्र तथा सामाजिक अनुसंधान पद्धति रामप्रसाद एण्ड संस, संशोधित संस्करण, पृष्ठ–७४

(११) शम्बर, डॉ. राजेश श्रीवास्तव, लोकसाहित्य, कैलाश पुस्तक सदन भोपाल, पृष्ठ–१८

(१२) गोयल, डॉ. कुन्तल, काले कण्ठो के श्वेत गीत, पंकज बुक्स, दिल्ली प्रथम संस्करण २०१२, पृष्ठ–३०५

(१३) जैन, डॉ. शान्ति, लोकगीतों के सन्दर्भ और आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक वाराणसी, प्रथम संस्करण १९६४, पृष्ठ–३

⌘⌘⌘